Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain college, Ara.

Notes For - B.A.-Part-III, paper-V

Topic- औरंगजेब की धार्मिक नीति (1658-1707):- शुरु में औरंगजेब ने कुछ प्रशासनिक सुधार किए। एक मनसबदार (इवान वजीह) की नियुक्ति की, जिसे लोगों के आचार-विचार की जिम्मेदारी दी गई। उसका कार्य था - शराब, भाँग, अफीम, गलत धंधों और व्यभिचार जैसे कुकर्मों की रोकथाम। बाद में सभी सुन्नी नियमों को हटाकर शिया कानून लाए गए और सभी नैतिक सुधारों का जिम्मा उसे दिया गया। 1699 में उसे मंदिरों को नष्ट करने का कार्य दिया गया। ईरानी नवरोज पर्व भी बंद कर दिए गए। पवित्र शब्दों पर काफिरों का असर न हो इसलिए सिक्कों पर अब कलीमा खुदा नहीं होता था। औरंगजेब का समय (1658-81) उत्तर भारत के लिए अकबर के सामंजस्य की नीति के विपरित नीति का सूचक था। उसकी शुरु की नीतियां मुस्लिमों को राहत देने और उनके करों को घटाने के लिए थी।

औरंगजेब की धार्मिक नीति एक विवादास्पद विषय है। अनेक यूरोपीय और भारतीय इतिहासकारों ने औरंगजेब को एक धर्मांध शासक के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार, अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति त्यागकर औरंगजेब ने धर्मांधता की नीति अपनाई। धार्मिक कट्टरता के वशीभूत होकर उसने गैर-इस्लाम धर्मवालों पर अत्याचार किए जिसके परिणामस्वरुप राज्य में अनेक विद्रोह हुए एवं मुगल सत्ता की जड़े खोखली हो गई। औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति ने मुगल साम्राज्य के पतन में योगदान दिया।

→

→ आधुनिक काल में अनेक विद्वान इस मत को स्वीकार नहीं करते हैं। उनका तर्क है कि औरंगजेब ने सिर्फ गैर-इस्लाम धर्मवालों के प्रति कठोर रवैया नहीं अपनाया बल्कि इस्लाम धर्म की अनेक कुरीतियों को भी बंद करने का प्रयास किया। उसने हिन्दु मंदिरों को तोड़ा ही नहीं, बल्कि अनेक मंदिरों एवं मठों को दान भी दिए। हिन्दू मनसबदारों की संख्या उसके समय में पहले से अधिक हो गई। वस्तुतः औरंगजेब की अपनी कुछ धार्मिक मान्यताएँ थीं एवं उसी के अनुरूप वह कार्य करता था। उसके अनेक हिन्दू-विरोधी कार्य वस्तुतः तत्कालीन राजनीतिक और आर्थिक कारणों से प्रभावित थे। इसलिए, उस पर धर्मांधता का आरोप नहीं लगाया जा सकता। सत्य दोनों के बीच है। वह न तो अति धर्मांध था और न अधिक उदार।

औरंगजेब की धार्मिक नीति तत्कालीन परिस्थितियों की देन थी। 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक भारत में अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन हो चुके थे। अनेक क्षेत्रीय शक्तियाँ धार्मिक उन्माद बढ़ाकर अपना राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करना चाहती थी। ऐसी शक्तियों में सिख, मराठे, बुंदेले इत्यादि प्रमुख थे। राजपूतों की मुगलों के प्रति स्वामिभक्ति भी कमजोर पड़ती जा रही थी। हिन्दु धर्म के पुनर्जागरण की प्रेरणा एवं विदेशियों (मुगलों) से भारत को स्वतंत्र कराने का आह्वान भी कुछ विचारक, संत एवं कवि इस समय कर रहे थे। मुगल दरबार भी धार्मिक आधार पर विभाजित था। हिन्दु बहुल दल दारा के उदार विचारों का समर्थक था, तो कट्टरपंथी मुस्लिम वर्ग औरंगजेब का।

उत्तराधिकार के युद्ध में दोनों पक्षों ने इसी आधार पर क्रमशः दारा और औरंगजेब को समर्थन दिया। इसके अतिरिक्त मुगल प्रशासन एवं राजनीति में लम्बे समय से भाग लेने के कारण हिन्दुओं का प्रभाव अधिक बढ़ गया था, जिसका दुरुपयोग वह धार्मिक आधार पर करते थे। कहीं-कहीं मुसलमानों को हिन्दु बनाने एवं मस्जिदों को तोड़ने की घटनाएँ

→ भी घट रही थी। ऐसी स्थिति में हिन्दुओं को नियंत्रण में रखने एवं मुसलमानों को अपना समर्थक बनाए रखने के लिए औरंगजेब के पास धार्मिक उदारता त्यागने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं था। औरंगजेब की व्यक्तिगत धार्मिक मान्यताओं ने भी उसकी धार्मिक नीति को गहरे रूप से प्रभावित किया। व्यक्तिगत तौर पर वह एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। वह इस्लाम के नियमों का कठोरता पूर्वक पालन करता था एवं धर्म विरोधी कोई भी कार्य सहन नहीं करता था। इस्लामी कानून की 'हनफी' विचारधारा का समर्थक होते हुए भी उसने धर्मनिरपेक्ष कानूनों, 'जवाबित' को लागू किया। उसने नैतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को दृढ़ करने वाले अनेक नियम लागू किए, जिन्हें सामान्यतः इस्लाम धर्म का विरोधी माना जाता है। इसी प्रकार गैर-इस्लाम धर्मवालों (हिन्दुओं) के विरुद्ध उठाए गए कदमों का उद्देश्य धार्मिक से अधिक राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक था।

औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने राजगद्दी कट्टरपंथियों के समर्थन से प्राप्त की थी। अतः शासक बनते ही उसने कुरान के नियमों का कड़ाई से पालन करवाना आरंभ किया। जिससे "दार-उल-हर्ब को 'दार-उल-इस्लाम' में परिवर्तित किया जा सके। इसलिए उसने पहले से चली आ रही 'कुरान' के नियम विरोधी अनेक प्रथाओं पर पाबंदी लगा दी। उसने सिक्कों पर 'कलमा' खुदवाना बंद कर दिया, जिससे सिक्के विभिन्न हाथों में जाकर गंदे न हो और अथवा पैरों तले रौंदे नहीं जाए। उसने "नौरोज' त्योहार मनाना बंद कर दिया, क्योंकि यह जरथुष्ट्र सम्प्रदाय का त्योहार था। " झरोखा दर्शन' एवं 'तुलादान' की प्रथा को भी इस्लाम विरोधी मानकर बंद कर दिया गया। इन्हें बंद करने का एक कारण यह भी था कि ये प्रथाएँ अंधविश्वास से प्रेरित थी। और इनके कारण छोटे- सरदारों पर आर्थिक दबाव पड़ता था। ज्योतिषियों एवं पंचांग बनाने वाले पर भी रोक लगा दी गई, परंतु औरंगजेब इन नियमों को बहुत कड़ाई /प्रभावी से लागू नहीं करवा सका।

→

राजपरिवार के सदस्य और अन्य लोग भी ज्योतिषियों पर से अपना विश्वास नहीं हटा सके। इसी प्रकार स्वयं औरंगजेब को अपने पुत्रों को बीमारी से ठीक होने के बाद 'तुलादान' की अनुमति दे दी। अपने शासन के 11 वें वर्ष में औरंगजेब ने दरबार में गायन एवं संगीत तथा नाच-गाने पर प्रतिबंध लगा दिया। यह प्रतिबंध पूरी तरह व्यवहार में नहीं लाया जा सका। महल में नौबत एवं अन्य बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों का प्रचलन बना रहा। हरम की स्त्रियों एवं प्रभावशाली सरदारों के घरों में नाच-गान प्रचलित रहा। औरंगजेब स्वयं भी वीणा बजाने में दिलचस्पी रखता था। साथ ही, उसके समय में फारसी भाषा में भारतीय संगीत पर अनेक उच्च कोटि की पुस्तकें भी लिखी गई। नैतिक दृष्टिकोण से सम्राट ने गांजा एवं अफीम को छोड़कर अन्य मादक पदार्थों के उपयोग पर पाबंदी लगा दी।

वेश्याओं और नर्तकियों को विवाह कर लेने/ साम्राज्य से बाहर निकल जाने के आदेश दिए गए। इसी प्रकार होली, मुहर्रम, वसंतोत्सव जैसे त्योहार, जुआ खेलने, तिलक लगाने एवं मूर्तियों के रखने पर भी रोक लगाई गई। कब्रों को छत से ढकने, स्त्रियों को मजारों पर जाने, दाढ़ी और पाजामें की लम्बाई निश्चित करने के भी आदेश निकाले गए।

औरंगजेब स्वयं भी कुरान के नियमों को कड़ाई से पालन करता था। अपने व्यक्तिगत जीवन को उसने नैतिक नियमों के अनुरूप ढाल लिया। उसका जीवन अत्यंत सात्विक एवं सादगीपूर्ण था। वह नियम से नमाज अदा करता, युद्ध क्षेत्र में भी वह इस नियम का पालन करता था। उसने जन्मदिन और राज्याभिषेक के अवसर पर किए जाने वाले भड़कीले आयोजनों को बंद करवा दिया। राजदरबार की भव्यता एवं आडम्बरता वाले समारोहों को समाप्त कर दिया गया। रेशमी वस्त्र एवं सोने-चाँदी के सजावट बंद करवा दिया। उसने इतिहास लेखन विभाग को बंद किया। औरंगजेब के इन सादगीपूर्ण कार्यों से कट्टर मुसलमानों में उसकी छवि निखर गई एवं वह 'दरवेश'/ जिंदापीर के नाम से विख्यात हुआ।